अरुणाचल प्रदेश में शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी

रिनचिन जोम्बा*
विवेक सिंह**

भाषा बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अरुणाचल प्रदेश भाषाई विविधता का राज्य है, लेकिन आधिकारिक तौर पर अंग्रेज़ी, शिक्षा का माध्यम है और हिंदी को अनौपचारिक रूप से शिक्षा की दूसरी भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस शोध-पत्र में माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम-कामेंग जिले के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति और अध्यापकों के मतों को प्रस्तुत किया गया है। शोधार्थियों द्वारा सर्वेक्षण पद्धति को अपनाते हुए यादृच्छिक न्यादर्श विधि से न्यादर्श का चयन किया गया तथा आँकड़े संग्रह करने के लिए स्व-निर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों पद्धतियों से किया गया था। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों की शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति अभिवृत्ति में अधिवास एवं विद्यालय के प्रकार तथा जनजातीय स्थिति के आधार पर सार्थक भिन्नता है, जबकि जेंडर के आधार पर कोई अंतर नहीं पाया गया। इसके अलावा, अध्यापकों का मत है कि जिले में अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों ही शिक्षा के माध्यम होने चाहिए।

भारत के बहुभाषी संदर्भ में, विद्यालयी शिक्षा में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में शिक्षा के माध्यम (भाषा) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अपने विचारों एवं भावनाओं को व्यक्त करने तथा अपने समाज के सदस्यों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। हमारे दैनिक जीवन में अभिव्यक्ति एवं समझ के लिए कई भाषाओं एवं बोलियों की आवश्यकता होती है, जैसे— घर में, खेल में, विद्यालय में, बाज़ार में इत्यादि। विद्यालय में प्रवेश करने से पहले, अधिकांश बच्चे पहले से ही एक या एक से अधिक भाषाएँ या बोलियाँ जानते हैं। अत: हमारी शिक्षा प्रणाली में भाषाओं के चयन पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। भाषा विचारों को व्यवस्थित करने में मदद करती है, और हम भाषा सीखने के साथ-साथ दूसरों के साथ संवाद करने और अनुभवों को साझा करने के लिए उपयोग करते हैं।

शिक्षा के माध्यम के रूप में भाषा अर्थात जिस भाषा का प्रयोग कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए किया जाता है। कई मामलों में यह पाया गया कि देश की राजभाषा या प्राथमिक भाषा शिक्षा का माध्यम नहीं है (किर्कपैट्रिक, 2011)। भारत ने नई शिक्षा

**टीजीटी (हिंदी)*, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, पकोटी, सेप्पा, जिला पूर्वी कामेंग, अरुणाचल प्रदेश 790102
***असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* विभाग शिक्षा विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स, दोईमुख, अरुणाचल प्रदेश 791112

नीति 1986 की अनुशंसाओं के आधार पर त्रि-भाषा सूत्र को स्वीकार किया, जिसमें— (क) मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा (ख) संघ की आधिकारिक भाषा या संघ की सहयोगी आधिकारिक भाषा, और (ग) एक आधुनिक भारतीय या विदेशी भाषा, जो (क) और (ख) के तहत शामिल नहीं है। इस अंतर्दृष्टि की अनुशंसा शिक्षा आयोग 1964–66 द्वारा की गई थी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1986 एवं 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1975, 1988, 2000 और 2005 द्वारा स्वीकार की गई। इसमें हिंदी के साथ-साथ गैर-हिंदी क्षेत्रों में तीन भाषाओं के फ़ॉर्मूले के आधार पर पढ़ाया जाना चाहिए। भारत में शिक्षा का माध्यम हिंदी, अंग्रेज़ी और संबंधित राज्यों की आधिकारिक भाषाएँ हैं। आमतौर पर विद्यालयों में भाषा का माध्यम अंग्रेज़ी और सरकारी विद्यालय हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों ही होती हैं। हालाँकि, उच्च शिक्षा के मामले में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी या क्षेत्रीय भाषा होता है। पाया जाता है कि शिक्षा का माध्यम राज्य और उसकी राजभाषा पर निर्भर करता है।

भारत समृद्ध भाषाई विविधता वाला देश है, जहाँ लगभग 652 भाषाएँ बोली जाती हैं, जो पाँच अलग-अलग भाषा परिवारों से संबंधित हैं— इंडो-आर्यन, द्रविड़ियन, ऑस्ट्रो-एशियाटिक, तिब्बती-बर्मी, और सेमिटो-हैमिटिक। हिंदी मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत में बोली जाने वाली इंडो-आर्यन भाषा परिवार से है। 26 जनवरी 1950 को हिंदी को भारत की राजभाषा बनाया गया था हालाँकि 21 अन्य भाषाओं को भी समय-समय पर आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई है। संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को देश की भाषा घोषित किया गया था और साथ ही अनुच्छेद 351 में उल्लेख किया गया है कि हिंदी के विकास के लिए विशेष प्रयास किए जाएँगे। जनगणना 2011 के अनुसार, 43.63 प्रतिशत भारतीय हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं।

अरुणाचल प्रदेश भारत के 28 राज्यों में से एक है जो देश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक पर्वतीय क्षेत्र है। यह 90 से अधिक भाषाओं के साथ भारत में सबसे अधिक भाषाई विविधता वाला राज्य है (*द इकोनॉमिक टाइम्स*, 2013)। 1.4 मिलियन (जनगणना 2011 के अनुसार) आबादी के साथ, राज्य में 26 प्रमुख जनजातियाँ और 100 से अधिक उप-जनजातियाँ हैं। इस राज्य की भाषाई विविधता में, हिंदी भाषा अब दैनिक जीवन की गतिविधियों में एक कड़ी के रूप में काम कर रही है। इस क्षेत्र में हिंदी ने 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान लोकप्रियता हासिल की थी। उस समय भारतीय सैनिक, जिनमें से अधिकांश हिंदी पट्टी से थे, युद्ध के दौरान सैनिकों के पास कुली न होने के कारण, उन्होंने भोजन और गोला-बारूद ले जाने के लिए आदिवासी ग्रामीणों की मदद ली। इसलिए आदिवासियों ने उनसे हिंदी सीखना शुरू कर दिया। इस प्रकार वर्तमान में हिंदी अरुणाचल की जनजातियों के बीच संपर्क की भाषा बन गई है (*फ्री प्रेस जर्नल*, 2014)।

अरुणाचल प्रदेश अब उत्तर-पूर्व भारत में हिंदी भाषा का एक फलता-फूलता केंद्र है। पश्चिम कामेंग अरुणाचल प्रदेश का खूबसूरत जिला है, जहाँ मोनपा, मिजी एवं शेरडुकपेन जनजाति के लोग एक साथ रहते हैं। इस जिले का नाम कामेंग नदी से लिया गया है, जो ब्रह्मपुत्र की एक सहायक नदी है, जो इस जिले से होकर बहती है। अरुणाचल प्रदेश के विद्यालय

त्रि-भाषा फार्मूले का पालन करते हुए अंग्रेज़ी, हिंदी और एक अन्य तीसरी भाषा में अनिवार्य शिक्षा प्रदान करते हैं। यद्यपि अरुणाचल प्रदेश की आधिकारिक भाषा अंग्रेज़ी है, लेकिन अधिकांश विद्यालयों में विशेष रूप से सरकारी विद्यालयों में शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी का भी प्रयोग किया जाता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अंग्रेज़ी को शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है, लेकिन जब अंग्रेज़ी में पढ़ाया जाता है, तो विद्यार्थियों में विषयवस्तु की समझ सीमित होती है, इसलिए स्थानीय भाषा में विषयवस्तु के स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है। एक अन्य शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि शिक्षा का माध्यम स्वतंत्र पसंद का विषय होना चाहिए (ढोंगडे, 1983)। कई गैर हिंदी क्षेत्रों में अंग्रेज़ी भाषा के बाद हिंदी को दूसरी प्रचलित भाषा के रूप में मान्यता मिली है (कौल और देवकी, 2001)।

अध्ययन का औचित्य

अरुणाचल प्रदेश की शिक्षा प्रणाली में त्रि-भाषा फ़ॉर्मूले का पालन किया जाता है अर्थात अंग्रेज़ी, हिंदी और मातृभाषा/भोटी/कोई भी अन्य भारतीय भाषा। यहाँ शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी का आधिपत्य है और हिंदी भाषा द्वितीय माध्यम के रूप में प्रयोग की जाती है। लेकिन कई विद्यालयों में विद्यार्थी और अध्यापक दोनों हिंदी में संवाद करने में सहज महसूस करते हैं। इसलिए शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति और शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी पर अध्यापकों के मत ज्ञात करने की आवश्यकता है। पूर्व शोधों की समीक्षा के आधार पर यह पाया गया कि अरुणाचल प्रदेश शिक्षा के माध्यम के रूप में 'अंग्रेज़ी' पर कुछ अध्ययन किए गए हैं, लेकिन शिक्षा के माध्यम के रूप में 'हिंदी' पर कोई अध्ययन नहीं किया गया है। इसलिए शोधार्थियों ने अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम-कामेंग जिले में माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी भाषा के उपयोग पर अध्ययन करने का निर्णय लिया।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे—

- स्वतंत्र चर (जेंडर, इलाके, विद्यालय के प्रकार और आदिवासी स्थिति) के आधार पर शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी पर अध्यापकों के मत ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की निम्न शून्य-परिकल्पनाएँ थीं—

- शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति छात्रों और छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति आदिवासी और गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

वर्तमान शोध अध्ययन अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम-कामेंग जिले के कक्षा 9 के विद्यार्थियों की शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन और अध्यापकों की हिंदी भाषा के प्रति मत का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। वर्तमान अध्ययन वर्ष 2019 में किया गया था।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन के लिए यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया था। पश्चिम-कामेंग जिले में कुल 25 विद्यालय थे, जिनमें से 18 सरकारी और सात निजी विद्यालय थे। इनमें से सात माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया था। इन चयनित माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 9 के 20 विद्यार्थियों और पाँच अध्यापकों का चयन किया गया था। इस प्रकार कुल 140 विद्यार्थियों व 35 अध्यापकों का चयन किया गया था। प्रतिदर्श में चयनित विद्यार्थियों एवं अध्यापकों का वर्गीकरण तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1— प्रतिदर्श में चयनित न्यादर्श का वर्गीकरण

चर	वर्गीकरण	संख्या
जेंडर	छात्र	56
	छात्राएँ	84
विद्यालय के प्रकार	सरकारी	100
	निजी	40
क्षेत्र	शहरी	80
	ग्रामीण	60
समूह	जनजातीय	110
	गैर-जनजातीय	30
अध्यापक	35	

तथ्य संकलन एवं विश्लेषण

शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को मापने के लिए शोधार्थियों द्वारा लिकर्ट के पाँच-बिंदु पैमाने (स्केल) पर आधारित मापनी और अध्यापकों के मत ज्ञात करने के लिए एक प्रश्नावली का निर्माण और प्रयोग किया गया था। अभिवृत्ति मापनी में 24 प्रश्न थे और प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच संभावित उत्तर पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत और पूर्णतः असहमत दिए गए थे, जिसमें से किसी एक विकल्प का चयन उत्तरदाताओं को करना था। प्रश्नावली में 12 प्रश्न थे, जिसमें 11 प्रश्न बंद उत्तर वाले (क्लोज एंडेड) और एक प्रश्न मुक्त उत्तर वाला (ओपन एंडेड) था। शोधार्थियों ने चयनित प्रतिदर्श से तथ्य संकलन के लिए चयनित माध्यमिक विद्यालयों का दौरा किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधार्थियों ने (एस.पी.एस.एस.) सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज सॉफ़्टवेयर की सहायता से माध्य, मानक विचलन, विचलन की मानक त्रुटि, 't'– मान, और df की गणना की गई।

परिणाम एवं चर्चा

शोधार्थियों द्वरा अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम-कामेंग जिले के विद्यार्थियों की शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति अभिवृत्ति के आँकड़ों और अध्यापकों की हिंदी भाषा के प्रति मतों का विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किए गए, जिसका विश्लेषण इस प्रकार है—

तालिका 2— हिंदी के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

सांख्यिकीय मूल्य	अंक
संख्या	140
माध्य मान	74.65

तालिका 2 (पृष्ठ संख्या 89) से स्पष्ट होता है कि 140 विद्यार्थियों के शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति अभिवृत्ति का माध्य मान 74.65 है। तालिका 2 से यह भी स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है।

तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि छात्रों की अभिवृत्ति का माध्य मान 93.04 है जबकि छात्राओं की अभिवृत्ति का माध्य मान 93.60 है और 't' मान – 0.34 है, जो तालिका मान 1.98 से (0.05 सार्थकता स्तर) से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना 'शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति पुरुष और महिला विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है' स्वीकार की जाती है और यह व्याख्या की जाती है कि शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति पुरुष और महिला विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एक जैसी है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि छात्रों एवं छात्राओं को समान भाषाओं के प्रयोग का अनुभव एवं अवसर प्राप्त हुआ होगा।

तालिका 4 दर्शाती है कि परिकलित 't' मान 2.38 है, जो तालिका मान 1.98 (0.05 सार्थकता स्तर) से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना 'शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है' निरस्त की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के माध्य वास्तविक अंतर है। तालिका 4 में दर्शाए माध्य-मानों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा

तालिका 3— हिंदी के प्रति छात्र और छात्राएँ विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

जेंडर	विद्यार्थी संख्या	माध्य	मानक विचलन	df	SE	t-मान
छात्र	56	93.04	9.8	138	1.64	-0.34
छात्रा	84	93.60	9.1			

तालिका 4— हिंदी के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

अधिवास	विद्यार्थी संख्या	माध्य	मानक विचलन	df	SE	t- मान
ग्रामीण	60	95.5	8.44	138	1.57	2.38 सार्थकता स्तर पर सार्थक
शहरी	80	91.75	10.22			

तालिका 5— हिंदी के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

विद्यालय	विद्यार्थी संख्या	माध्य	मानक विचलन	df	SE	t- मान
सरकारी	100	94.9	8.88	138	1.90	3.09 सार्थकता स्तर पर सार्थक
निजी	40	89	10.67			

तालिका 6— हिंदी के प्रति आदिवासी और गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

जनजातीय स्थिति	विद्यार्थी संख्या	माध्य	मानक विचलन	df	SE	t- मान
जनजातीय	110	94.28	9.19	138	1.96	2.18 सार्थकता स्तर पर सार्थक
गैर-जनजातीय	30	90	10.5			

तालिका 7— हिंदी भाषा के विषय में अध्यापकों के विचार

क्र.स.	कथन	हाँ (%)	नहीं (%)
1.	यदि माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक हिंदी में पढ़ाएँ तो यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को प्रभावित करेगा।	46%	54%
2.	जब मैं कक्षा में पढ़ाता हूँ तो हिंदी के प्रयोग से बचता हूँ।	37%	63%
3.	ऐसा लगता है कि अधिकांश विद्यार्थियों को हिंदी में सीखना सुखद लगता है।	71%	29%
4.	मैं हिंदी माध्यम में बेहतर व्याख्या कर सकता हूँ।	66%	34%
5.	विज्ञान और गणित विषय पढ़ने में हिंदी के प्रयोग से बचना चाहिए। क्योंकि इसमें ऐसे शब्द हैं, जिनकी व्याख्या हिंदी में नहीं की जा सकती है।	66%	34%
6.	जब मैं अंग्रेज़ी में पढ़ाता हूँ, तो मेरे विद्यार्थी ठीक से नहीं समझ पाते हैं।	54%	46%
7.	कक्षा में सीखने के लिए हिंदी अधिक कुशल और प्रभावी भाषा है।	57%	43%
8.	क्या आप माध्यमिक स्तर की शिक्षा के लिए हिंदी माध्यम के पक्ष में हैं?	49%	51%
9.	मुझे लगता है कि पश्चिम कामेंग जिले के अधिकांश माध्यमिक विद्यालय शिक्षा के द्वितीय माध्यम के रूप में हिंदी का प्रयोग करते हैं।	86%	14%
10.	मुझे लगता है कि विद्यार्थी हिंदी भाषा में पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना पसंद करते हैं।	69%	31%
11.	कक्षा शिक्षण हिंदी में नहीं होना चाहिए, क्योंकि अंग्रेज़ी करियर की भाषा है।	43%	57%

सकता है कि शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति शहरी विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिवृत्ति अधिक है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि शहरी विद्यार्थियों को ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अंग्रेज़ी भाषा का वातावरण मिलता होगा।

तालिका 5 (पृष्ठ संख्या 90) से स्पष्ट होता है कि परिकलित 't' मान 3.09 है जो तालिका मान 1.98 (0.05 सार्थकता स्तर) से अधिक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना 'शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति सरकारी और निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है' निरस्त की जाती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का अभिवृत्ति अपेक्षाकृत सकारात्मक है।

इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि निजी विद्यालयों में प्राय: अंग्रेज़ी बोलने की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाता होगा।

तालिका 6 (पृष्ठ संख्या 91) दर्शाती है कि परिकलित 't' मान 2.18 है जो, तालिका मान 1.98 (0.05 सार्थकता स्तर) से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना 'शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति आदिवासी और गैर-आदिवासी विद्यार्थियों के अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है' निरस्त की जाती है। तालिका 7 में दर्शाए गए माध्यों के अनुसार यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति जनजातीय विद्यार्थियों की अभिवृत्ति गैर-जनजातीय विद्यार्थियों की तुलना में सकारात्मक है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि जनजातीय विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के बाद हिंदी से जुड़ते हैं, क्योंकि हिंदी अरुणाचल प्रदेश में दैनिक जीवन की एक आम भाषा है। जबकि गैर-जनजातीय विद्यार्थियों का संबंध भारत के अन्य राज्यों से है जिनके अभिभावक अरुणाचल प्रदेश में किसी व्यवसाय अथवा नौकरी के लिए निवास कर रहे हैं।

तालिका 7 (पृष्ठ संख्या 91) दर्शाती है कि 54 प्रतिशत अध्यापक इस बात से असहमत थे कि हिंदी में शिक्षण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को प्रभावित करेगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी होने के बावजूद बहुत से अध्यापक हिंदी को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के लिए प्रभावी मानते हैं। 63 प्रतिशत इस बात से असहमत थे कि वे कक्षा शिक्षण के समय हिंदी का उपयोग करने से परहेज़ करते हैं। इसका संभावित कारण यह है कि मात्र अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग करके विद्यार्थियों से बेहतर संवाद स्थापित करना मुश्किल है, इसलिए हिंदी का प्रयोग आवश्यक है। 71 प्रतिशत अध्यापकों ने सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि अधिकांश विद्यार्थियों के लिए हिंदी माध्यम में सीखना सुखद है। इसका कारण यह है कि हिंदी यहाँ अंतर-जनजातीय संवाद की भाषा है। यह विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए अधिक सहज है। 66 प्रतिशत अध्यापकों ने माना कि वे हिंदी के माध्यम से बेहतर व्याख्या कर सकते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि हिंदी भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों की क्षमता स्तर के अनुसार विषय समझाया जा सकता है। 66 प्रतिशत अध्यापक सहमत थे कि विज्ञान और गणित पढ़ाने में हिंदी का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इसमें ऐसे शब्द हैं जिन्हें हिंदी में समझाया नहीं जा सकता। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि गणित और विज्ञान विषय के संप्रत्ययों को अंग्रेज़ी भाषा में अपेक्षाकृत बेहतर सिखाया जा सकता है।

तालिका 7 (पृष्ठ संख्या 91) के अनुसार 54 प्रतिशत अध्यापक सहमत थे कि उनके विद्यार्थी अंग्रेज़ी भाषा में पढ़ाते समय नहीं समझते हैं। इसका कारण यह है कि अंग्रेज़ी अधिकांश विद्यार्थियों के दैनिक बोलचाल की भाषा नहीं है। 57 प्रतिशत अध्यापक सहमत थे कि हिंदी कक्षा में सीखने के लिए अधिक कुशल और प्रभावी भाषा है। क्योंकि विभिन्न जनजातीय एवं सामाजिक समूह के विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए हिंदी भाषा एक बेहतर विकल्प है। 51 प्रतिशत अध्यापक इस बात से असहमत थे कि माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षा

का माध्यम हो। इसका कारण यह है कि हिंदी यहाँ केवल बोलचाल की भाषा है। लिखने और पढ़ने में इसका प्रयोग कम होता है। 86 प्रतिशत अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की है कि पश्चिम कामेंग जिले के अधिकांश विद्यालय शिक्षा के द्वितीय माध्यम के रूप में हिंदी का उपयोग कर रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हिंदी भाषा अंग्रेज़ी के साथ विद्यालयों में प्रयोग की जाती है। 69 प्रतिशत अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की है कि शिक्षार्थियों को माध्यमिक स्तर पर हिंदी में पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना पसंद है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी हिंदी में सहज महसूस करते हैं। 57 प्रतिशत अध्यापक असहमत थे कि कक्षा शिक्षण हिंदी में नहीं होना चाहिए जबकि अंग्रेज़ी करियर की भाषा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक हिंदी को एक समर्थ भाषा के रूप में स्वीकार करते हैं। उपरोक्त परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अध्यापक, शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के पक्ष में हैं। साथ ही, अंग्रेज़ी को औपचारिक माध्यम बनाए रखने की आवश्यकता है।

उपरोक्त प्रश्नों के अतिरिक्त अध्यापकों से एक मुक्त उत्तर का प्रश्न (ओपन एंडेड) पूछा गया कि आपका शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी भाषा पर क्या विचार है। इस पर अध्यापकों के विचार इस प्रकार हैं—कक्षा शिक्षण के दौरान हिंदी, अंग्रेज़ी के साथ प्रयोग की जा सकती है। किंतु इसे विद्यालयी शिक्षा का एकमात्र माध्यम नहीं होना चाहिए। शिक्षा का माध्यम मात्र हिंदी भाषा होने से यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के साथ-साथ आगे की पढ़ाई को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। साथ ही यह विद्यार्थियों के करियर के विकल्पों में बाधा उत्पन्न करेगा, क्योंकि आजकल अंग्रेज़ी में बोलना और लिखना अनिवार्य है। इसी प्रकार अधिकांश अध्यापकों ने कहा कि कुछ सीमा तक शिक्षा का हिंदी माध्यम लाभप्रद है क्योंकि हमारे राज्य में हिंदी भाषा को आमतौर पर एक-दूसरे के साथ संवाद करने के लिए प्रयोग किया जाता है। लेकिन जब लिखने की बात आती है, तो विद्यार्थी हिंदी में ठीक से नहीं लिख पाते हैं। अधिकांश उत्तरदाता शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों के पक्ष में थे क्योंकि कुछ विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी माध्यम में समझना मुश्किल होता है। उन्होंने यह भी कहा कि माध्यमिक स्तर पर अंग्रेज़ी को शिक्षा का माध्यम होना चाहिए, क्योंकि हिंदी माध्यम में विज्ञान के विषयों को समझना मुश्किल होता है और अंग्रेज़ी आगे की उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को मदद करेगी। फिर भी, सामान्य तौर पर अध्यापक अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों माध्यमों के पक्ष में थे।

शैक्षिक निहितार्थ

वर्तमान शोध अध्ययन शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति और अध्यापकों के मत ज्ञात करने के लिए किया गया था। इस शोध अध्ययन के परिणाम अरुणाचल प्रदेश में शिक्षा के माध्यम की उचित भाषा से संबंधित नीति बनाने में नीति-निर्माताओं, योजनाकारों और कार्यान्वयनकर्ताओं के लिए सहायक होंगे। साथ ही, उच्च शिक्षा संस्थानों और अध्यापक-प्रशिक्षकों को शिक्षा के उपयुक्त माध्यम का चयन करने और शिक्षण कौशलों में सुधार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करने में मदद करेंगे। इसके अलावा भारत के अन्य क्षेत्रों या राज्यों में शिक्षा

के माध्यम से संबंधित नीति निर्धारण में सहायक सिद्ध होंगे। यह शोध अध्ययन अन्य विद्वानों, एवं शोधार्थियों को अरुणाचल प्रदेश में शिक्षा के माध्यम की वर्तमान स्थिति को जानने में मदद करेगा।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन में शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति और अध्यापकों के विचारों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया था। यह एक मात्रात्मक और गुणात्मक अध्ययन था, जिसमें सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया था। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति विद्यालय के प्रकार, अधिवास के प्रकार और आदिवासी स्थिति के संबंध में भिन्न है, लेकिन जेंडर के आधार पर अभिवृत्ति में अंतर नहीं है। दूसरी ओर अध्यापक इस बात से सहमत थे कि शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी का प्रयोग होता रहे, क्योंकि पश्चिम-कामेंग जिले में, अधिकांश विद्यार्थी हिंदी माध्यम में विषयों को बेहतर समझते हैं। फिर भी वे केवल हिंदी को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग करने से असहमत थे।

संदर्भ

अग्रवाल, एस. 1991. *थ्री लैंग्वेज फ़ॉर्मूला— एन एजुकेशनल प्रॉब्लम*. पृष्ठ संख्या 37–39. गेन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.

अदामु, ए. 2002. स्टूडेंट्स एटीट्युड टुवर्ड्स मदर-टंग इंस्ट्रक्शन इज अ कोरिलेट ऑफ़ अकादमिक अचीवमेंट— अ केस स्टडी ऑफ़ सिदामा. *अ थीसिस सब्मिटेड टू द विद्यालय ऑफ़ ग्रेजुएट स्टडीज*. अदिस अबाबा यूनिवर्सिटी. 07 मार्च 2021 को https://www.academia.edu से प्राप्त किया गया.

इब्राहीम, एच. एस., एस. अनका और एन. यू. याबो. 2017. *इंग्लिश इज़ ए मीडियम ऑफ़ इंस्ट्रक्शन— चैलेंजेस टू नाइजीरियन प्राइमरी स्कूल्स*. 08 अक्तूबर 2020 को https://journals.sfu.ca>article> से प्राप्त किया गया.

क्लेग्ग, जे. और ओ. अक्फित्सका. 2011. टीचिंग एंड लर्निंग इन टू लैंग्वेजेज इन अफ़्रीकन क्लासरूम. *कंपेरेटिव एजुकेशन* 47 (1), पृष्ठ संख्या 61–77.

किर्कपैट्रिक, ए. 2011. इंग्लिश इज़ ए मीडियम ऑफ़ इंस्ट्रक्शन इन एशियन एजुकेशन— इंपलीकेशन फ़ॉर लोकल लैंग्वेज एंड स्कॉलरशिप. एप्लाइड लिंगविस्टिक रिव्यू 2. ली. वेई. (संपादक). दुएस्चे नेशनल बिब्लिओथेक, न्यूयॉर्क. पृष्ठ संख्या 99–119.

कौल, ओ.एन. और देवकी. 2001. मीडियम ऑफ़ इंस्ट्रक्शन अक्रॉस लेवेल्स ऑफ़ एजुकेशन.*लैंग्वेज एजुकेशन इन मल्टीलिन्गुअल इंडिया*. देसवानी सी. जे.(संपादक). यूनेस्को. नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 104–116.

गोयल, एस. पी. पांडे. 2009. हाउ डू गवर्मेंट एंड प्राइवेट स्कूल डिफ़र? फाइंडिंग फ्रॉम टू इंडियन स्टेट्स. *साउथ एशिया ह्यूमन डेवलपमेंट सेक्टर सीरीज*. नंबर 30. वर्ल्ड बैंक, वाशिंगटन,डी.सी. 15 दिसंबर 2021 को https://openknowledge.worldbank.org/handle/10986/17962 License: CC BY 3.0 IGO. से प्राप्त किया गया.

गौतम, वी. 2003. *एजुकेशन ऑफ़ ट्राइबल चिल्ड्रेन इन इंडिया एंड इश्यू ऑफ़ मीडियम ऑफ़ इंस्ट्रक्शन— ए जनशाला एक्सपीरियंस*. 17 अगस्त 2020 को https://jarom.org/wp-content/uploads/2013/01/education-of-

tribal-children-in-india-a-janshala-experience.pdf से प्राप्त किया गया.

चौधरी, यू. 1978. *अ क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ लैंग्वेज पॉलिसी ऑफ़ इंडिया इन रिलेशन टू द एजुकेशनल नीड्स एंड एस्पिरेशन ऑफ़ द डिफरेंट लिंगविस्टिक कम्युनिटीज ऑफ़ इंडिया*. अप्रकाशित शोध प्रबंध. महाराज सेयाजी राव गायकवाड विश्वविद्यालय, वडोदरा.

दास, इ. एल. एल., और अन्य. 2001. ब्राजीलियन टुवर्ड्स इंग्लिश— डाईमेंशन ऑफ़ स्टेटस एंड सॉलिडेरिटी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स*. 11(1), पृष्ठ संख्या 51–74. 15 फरवरी 2021 को https://eric.ed.gov> से प्राप्त किया गया.

द फ्री प्रेस जर्नल 2014. स्पीकिंग हिंदी नाउ ए वे ऑफ़ लाइफ़ इन अरुणाचल प्रदेश. 09 जनवरी 2020 को https://freepressjournal.in से प्राप्त किया गया.

द *इकॉनोमिक टाइम्स*. 2013 (जुलाई 16). पीपल लिंगविस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया. 15 नवंबर 2021 को https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/arunachal-pradesh-has-the-most-linguistic-diversity-in-india-survey/articleshow/21108226 से प्राप्त किया गया.

ढोंगडे, आर. वी. 1983. मराठी एज ए मीडीयम ऑफ़ इंस्ट्रक्शन इन हायर एजुकेशन. *बुलेटिन ऑफ़ द दकन कॉलेज रिसर्च इंस्टीट्यूट,* 42, पृष्ठ संख्या 69–73. 17 अगस्त 2020 को https://www.jstor.org/stable/42930049 से प्राप्त किया गया.

नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन एंड प्रोग्राम ऑफ़ एक्शन 1986, 1992. 18 जुलाई 2020 को http://mhrd.gov.in/sites/uploadfiles/uploaddocument/npe.pdf से प्राप्त किया गया.

नेशनल नॉलेज कमीशन. 2008. रिकमेन्डेशन ऑन लैंग्वेजेज. भारत सरकार. 12 अगस्त 2020 को http://www.sampitroda,com/knowlege-commission/ से प्राप्त किया गया.

बहौस, आर. एन. एन. बाचा और एम. नभानी, 2011. मल्टीलिन्गुअल एजुकेशनल ट्रेंड्स एंड प्रैक्टिसेज. इन लेबनॉन. *ए केस स्टडी इन इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ़ एजुकेशन*. 57 (5–7). पृष्ठ संख्या 737–749.